परिवर्तन-शक्ति पर हमारा विश्वास होना चाहिए और परिवर्तन में जैसे सामनेवाले के परिवर्तन की बात आती है, वैसे ही हमारे भी परिवर्तन की आती है। हम उसका परिवर्तन करेंगे, इसमें हम मानते हैं, वैसे ही वह भी हमारा परिवर्तन कर सकेगा, इसमें मानना चाहिए। हम उसका परिवर्तन करनेवाले हैं और हमारा हृदय सर्वथा अपरिवर्तनीय है, ऐसा नहीं मानना चाहिए। बल्कि हमारे भी हृदय में कई ग्रन्थियाँ, गाँठें हैं, जड्बे पैदा होते हैं, यह मानना चाहिए और शान्त मन से सोचना चाहिए कि हमारा भी परिवर्तन हो सकता है।

इस तरह मानकर हम चलें तो मसले हल हो सकते हैं। इसीको मैं सादी भाषा में कहता हूँ कि मन के ऊपर उठकर सोचना चाहिए। इन दिनों बार-बार मेरे मन में यह विचार आता है कि हमें समझना चाहिए कि इस जमाने में क्षोभ के लायक कोई मसला पैदा नहीं होता है। वह पुरान जमाना था, जब कि मसले पैदा होते थे, उनकी जानकारी नहीं होती थी और जब जानकारी हो जाती थी तो क्षोभ पैदा होता था। आज हमें हर चीज की जानकारी हासिल होती है। इसलिए यह जरूरी है कि क्षोभ न हो और हमें समझना चाहिए कि कोई भी मसला आमने-सामने बैठकर हल हो सकता है, उसमें लेन-देन हो सकती है।

सत्याग्रही नहीं, सत्यग्राही !

दोनों बाजू मन ही काम करता रहेगा तो मसले हल नहीं होंगे। हमने राज्य-पुनर्रचना के मामले में जो हुआ, वह सब देखा है। उस वक्त हर प्रान्त दावा करता था कि फलानी जगह हमारी ही है। एक प्रान्त के कुल लोग एक बाजू और दूसरे प्रांत के कुल लोग दूसरी बाजू, यह हमने देखा है। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी उसी तरह दावे और प्रति-दावे पेश होंगे। लेकिन हर हालत में हमारे मन में यह हो कि जैसे हम परिवर्तन कर सकते हैं, वैसे सामनेवाला भी हमारा परिवर्तन कर सकता है और क्षोभ का कोई कारण नहीं है।

इसके आगे जो सत्याग्रही हो, वह अक्षोभ्य हो। उसे मन अक्षुब्ध रखना चाहिए। सत्याग्रही की कसौटी है अक्षोभ्यता। उसके सत्य के कारण सामनेवाले के मन में भी अक्षोभ पैदा होना चाहिए। वह सत्याग्रही नहीं, सत्यग्राही हो। सत्यग्राही वह होगा, जो सत्य का दावा नहीं छोड़ेगा, लेकिन सामनेवाले के पास सत्य है ही नहीं, ऐसा नहीं मानेगा, बल्कि उसके पास भी सत्य हो सकता है, ऐसा मानेगा।

सत्य का एक अंश मेरे पास है, जिसे मैं नहीं छोड़ूँगा, लेकिन दूसरा अंश सामनेवाले के पास हो सकता है, यह मानना चाहिए। वह अंश कम-बेसी हो सकता है। उसकी चर्चा धीरे-धीरे तटस्थ बुद्धि से की जा सकती है। ऐसा सत्याग्रही समाज बनाना है। सत्याग्रही वह होगा, जो सत्य को ग्रहण करनेवाला, उससे चिपके रहनेवाला होगा। अपने पास सत्य का जो अंश है, उसे न छोड़नेवाला होगा और सामनेवाले के पास जो सत्य का अंश है, उसे ग्रहण करने की उसकी तैयारी होगी। ऐसा सत्यग्राही मन और समाज हम बनाना चाहते हैं। यह सत्यग्राही शब्द मुझे बंगाल और उड़ीसा के भक्ति-साहित्य में चलनेवाले भावग्राही शब्द से सूझा। उसमें कहा गया है कि भगवान भावग्राही होते हैं, भाव को ग्रहण करते हैं। मैं शब्द की खोज में था तो मुझे यह नया सत्यग्राही शब्द सूझा, जिससे मुझे तसल्ली हुई। मैं चाहता हूँ कि हम सब सत्यग्राही बनें। इसमें अपने सत्य के साथ चिपके रहने और सामनेवाले के पास जो सत्य है, उसको ग्रहण करने की तैयारी रखने की जो बात है, वह मन के ऊपर उठे बगैर संभव नहीं है।

सत्य किसकी 'इस्टेट' है ?

सामनेवाले के पास भी सत्य है, आंशिक नहीं, पूर्ण सत्य है। ऐसा वह मानता है। ऋग्वेद में युद्ध के लिए कई शब्द आये हैं, इसमें एक शब्द है : 'मम सत्यम्'। यास्काचार्य ने कहा 'मम सत्यं युद्धम्' याने मम सत्य ही युद्ध है। ऋग्वेद में कहा है : 'त्वां जनाः मम सत्येषु इन्द्र।' हे इन्द्र, लोग तुझे 'मम सत्य' में अपनी मदद के लिए बुलाते हैं। हमने देखा कि महायुद्ध में दोनों बाजू ईसाई राष्ट्र थे, जो अपनी फतह हो, इसलिए परमेश्वर के पास मदद माँगते थे। दोनों पक्ष युद्ध में तेरी मदद माँगते हैं, ऐसा भगवत्-वर्णन आता है। उसमें युद्ध के लिए 'मम सत्य' कहा गया है। सत्य मेरा है, इसका नाम है युद्ध। सत्य मेरा ही है, सामनेवाले का सत्य नहीं है। सत्य मेरे बाप की इस्टेट है, सामनेवाले का उसपर कोई हक नहीं है, इस तरह जब आप मानते हैं तो लड़ाई के सिवाय बात नहीं है। फिर उस लड़ाई को आप निःशस्त्र लड़ाई का रूप दें तो भी उससे सत्यग्राही नहीं बनेगा। मैं कहना यह चाहता हूँ कि हमारी जमात की सत्यग्राही वृत्ति रहे तो हमारी जमात छोटी होने पर भी हिन्दुस्तान की बहुत सेवा करेगी।

विश्वास न खोयें

दो साल पहले येलवाल परिषद हुई थी। उसके छह महीने के बाद यह विचार निकला था कि जब कि हम शांति-सेना बनाना चाहते हैं तो शांति-सेना के लिए बहुत अनुकूलता होगी, अगर भिन्न-भिन्न राजनैतिक आन्दोलन चलाने के विषय में कुछ साधारण नीति तय की जाय। और जैसे येलवाल में सब पक्षों के नेता इकट्ठा हुए थे, वैसे ही फिर से इकट्ठा हों और कुछ फैसले करें। सर्व-सेवा-संघ इस प्रकार की परिषद बुला सके तो बुलाये, ऐसा विचार चल रहा था तो नेताओं के साथ भी मेरी बात हुई थी। मैं उसकी तफसील में नहीं जाना चाहता हूँ, लेकिन हमारे सामने सवाल यह आता है कि अगर हम इन दिनों परिषद बुलाते तो कुछ काम बनता या नहीं, उससे कोई प्रयोजन निकलता या नहीं, लेकिन उन दिनों वह सवाल जितना कठिन था, उससे ज्यादा कठिन आज हुआ है। क्योंकि आज शब्द-शक्ति का भरोसा टूट ही चुका है। दो साल पहले उतना टूटा नहीं था। खास कर केरल में जो बनाव बने, उसका परिणाम यह हुआ कि किसी नेता का कोई विश्वसनीय शब्द है, ऐसा मानने के लिए लोग राजी नहीं हैं। शब्दों में जहाँ अविश्वास पैदा हुआ, वहाँ आमने-सामने बैठकर बात करे और किसी नतीजे पर आये, यह भी सम्भव नहीं है।

[चालू]

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता : गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी

www.vinoba.in